Notification No.: 572/2024

Date of Award.: 31-December-2024

Name of Scholar: Amir Khan

Name of Supervisor: Prof. Dileep Kumar Shakya

Name of Department/Faculty: Hindi, Faculty of Humanities & Languages, JMI

Topic of Research: SAMKALEEN HINDI KATHA SAHITYA MEIN HASHIYE KE SAMAJ KA ADHYAYAN (VISHESH SANDARBH: MANZOOR EHATESHAM, ASGAR WAJAHAT AUR BHAGWANDAS MORWAL)

Keywords: Katha Sahitya, Hashiye Ka Samaj, sampradayikta, Vimukt Janjati, Samajik Sanghrash, Muslim Samaj.

Finding:-

हाशिए के समाज का व्यक्ति जीवनपर्यन्त अपने अस्तित्व और स्वतन्त्रता के लिए मुख्यधारा से बार-बार टकराता है। वह राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी को विशेष रुप से प्रस्तुत करता है। लेकिन समाज की रूढ़िगत सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था उसे उभरने नहीं देती है। उच्च वर्ग का समुदाय जानबूझ कर हाशिए के समाज को जीवन जीने की मूलभूत सुविधाओं से वंचित कर देता है इसलिए ही विकास की प्रक्रिया से वंचित हो जाने के कारण समाज से कट जाता है। जिन समुदायों को जाति, वर्ग, रंग-भेद, लिंग, धर्म के माध्यम से समाज में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि सहिभागिता से वंचित कर दिया जाता है उसे हाशिए पर छूटा समाज कहा जाता है। इनमें मुख्यतः दलित, आदिवासी, स्त्री, निम्नवर्गीय मुस्लिम समाज आदि आते हैं।

मंजूर एहतेशाम, असगर वजाहत और भगवानदास मोरवाल के कथा-साहित्य में सांप्रदायिकता, स्त्री चेतना, मुस्लिम समुदायों में रुढ़िवादी सोच, सामाजिक संघर्ष आदि सबसे प्रमुख है। हाशिए के समाज की मूल समस्याओं को इन तीनों रचनाकारों ने भलीभांति परखा है। असगर वजाहत के कथा-साहित्य में हाशिए के समाज का आक्रोश व्यक्त हुआ है। कहानियों एवं उपन्यासों में जीवन के तमाम रंग देखने को मिलते हैं। देश की विविधता और एकता के टूटते धागे को जोड़ने का प्रयास करते हैं और अपने लखने के माध्यम पाठक को जीवन की सच्चाई से रूबरू कराते हैं। हाशिए पर पड़े लोगों की पीड़ा, विवशता, और पिछड़ेपन का चित्रण इनके कथा-साहित्य में देखने को मिलता है। इसी तरह मंजूर एहतेशाम के कथा-साहित्य में आजादी के बाद परिवर्तित होती सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से उपजी समस्याओं का अंकन दिखाई देता है। मंजूर एहतेशाम ने मुस्लिम और

हिन्दू समुदायों के बीच खाई की प्रत्यक्ष गाथा का वर्णन किया है। विभाजन के बाद देश में व्याप्त द्वेष भावना ने साझी संस्कृति को हानि पहुंचाई। आजादी के बाद भारत में मुस्लिम परिवारों का विघटन और पतन शुरू हो गया। यही नहीं हिन्दू परिवारों को भी अपने जान-माल और रोजगार से हाथ धोना पड़ा। सभी ने अपने लोगों का विस्थापन से जूझते देखा। मंजूर एहतेशाम ने अपनी रचनाओं में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के सामाजिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है। धार्मिक स्वतन्त्रता और सामाजिक गतिशीलता के पक्षधर होने के नाते मंजूर एहतेशाम ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में समता, सुरक्षा, एकता एवं बन्धुता की भावना को अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भगवानदास मोरवाल का लेखन भी विस्तृत और विपुल है। वे समाज के हाशिए पर धकेले गए वर्ग की आवाज को बड़े ही मुखरता से उठाते हैं। भगवानदास मोरवाल ने हाशिए के समाज की लगभग प्रत्येक समस्याओं को विषय बनाकर कहानी और उपन्यास लिखे हैं। देश में विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं जिनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परतन्त्रता को देखते हुए भगवानदास मोरवाल ने अपना लेखन किया है। वस्तुतः तीनों कथाकारों की रचनाओं का फलक एक जैसा है। अलग-अलग पृष्ठभूमि के होते हुए भी इनकी हाशिए के समाज के प्रति चिंता एक जैसी है।